इंद्रजाल कॉमिक्स
संख्या १०६
हीरों भरा कुत्ता
टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन
मूल्य
भारत में
एक प्रति ७० पैसे
वार्षिक मूल्य
रु. १९.०० (डाक से)
अन्य देशों में
एक प्रति १ शि. ९ पें.

पी हैं कभी दिन भर की ख़ुशियाँ ?

फ़ैण्टा ऑरेंज
क्या कहने....
जी चाहता है
प्यास लगे !

वेताल
की सेना

बेटा, जंगल गश्ती सेना में तुम्हारी नियुक्ति हो गयी है!
पिताजी, मुझे तो लाइब्रेरियन बनना है!

अरे छोड़ो! हम स्माइथ तीन पीढ़ियों से गश्ती सेना में हैं! यह परम्परा तुम नहीं तोड़ सकते!

पिता जी, मुझे जंगल अच्छा नहीं लगता। कीड़े-मकोड़ों, जानवरों, हथियारों और जंगल-वालों सब से मैं डरता हूँ!

तो क्या! वे तुम्हें मर्द बना देंगे। सामान बाँधो और जाओ!
अच्छी बात है!

मैं कप्तान क्लार्क हूँ! मुझे बड़ी खुशी है कि एक और स्माइथ गश्ती सेना में आया!
धन्य-वाद!

हर बार "साहब" कहा करो। भाग्यशाली हो जो गश्ती सेना में आये। सेना का काम कठिन है लेकिन उतना ही दिलचस्प भी। अब तुम्हारी तालीम शुरू होगी। जाओ!
जी साहब!

दिलचस्प!!

गश्ती सेना प्रशिक्षण।

बड़बड़...
बड़बड़...

हौंफ़ —
हौंफ़ —

यह तो साधारण प्रारम्भ है। असली मेहनत कल से शुरू होगी।
जी — (हम्फ) साहब!

लिखाई-पढ़ाई कैसी हो रही है, साहब?
बहुत अच्छी, साहब। एक बात समझ में नहीं आती --- आप बतायेंगे क्या?

जंगल से लगे हुए हर देश का अपना दस्ता है - और अपनी कमान है।
हाँ है। मैं तुम्हारी उलझन समझ गया!

समझ गये, साहब? इस सारिणी में सब दस्तों के ऊपर सर्वोच्च सेनापति दिखाये गये हैं। वे कौन हैं, यह पता नहीं लगा!
हर नया सैनिक यही सवाल पूछता है... लेकिन सेनापति को कोई जानता नहीं!

सेना के सर्वोच्च सेनापति का पता ही नहीं? यह तो असम्भव है!
क्यों? सच्चाई हमेशा से यही है।

२०० साल से अधिक बीते - जब यह सेना बनी थी। ऊपर से हुक्म कभी-कभी ही आते हैं... तब भगदड़ मच जाती है!

लेकिन हुक्म आते कहाँ से हैं?
बस आ जाते हैं! तुम चिन्ता छोड़ो.. काम बढ़िया होता है।

अजीब बात है! मैं पता लगा कर ही रहूँगा — चाहे मर ही जाऊँ!
जंगली सेना बैरक ४

कौन होगा सर्वोच्च सेनापति?
फिर कहिये, साहब?
तुम सुन नहीं रहे थे! क्लास के बाद रहना!

सेना में ऐसे आदमी नहीं चाहिएँ --- तुम्हें निकाला...
नहीं, निकालिये मत! पिता जी घर में घुसने नहीं देंगे! एक मौका दीजिये!

स्माइथ, तुम अपने दस्ते के साथ क्यों नहीं गये?
जी-साहब, मैं सेना का इतिहास पढ़ रहा हूँ... यह देखने कि-

...सर्वोच्च सेनापति कौन है? मैंने बताया न कि यह बात गुप्त है! तुम तालीम लेने आये हो-पढ़ने नहीं! जाओ!

स्माइथ, बहुत खोज-खबर लगाता है, कर्नल!
ठीक ही है... शुरू में सभी लगाते हैं। उसे मेरे पास भेजो!

तुम्हें देख कर बड़ी खुशी हुई, स्माइथ! मैं सेना में तुम्हारे पिता के मातहत नियुक्त हुआ था! सेनापति की जानकारी चाहते हो?

जी, कर्नल साहब-बड़ा अजीब लगता है।
है अजीब! हर नये अधिकारी को यही लगता है। तुम्हें सेनापति का कार्यालय दिखाऊँ।

यह उनका कार्यालय है? इसमें तिजोरी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।
हाँ... प्रमुख अधिकारी होने के नाते मैं रोज़ सुबह तिजोरी खोल कर देखता हूँ कि कोई हुक्म आया है क्या!

अक्सर - आज की तरह - खाली मिलती है... कभी-कभी हुक्मनामा तैयार मिलता है।

लेकिन वह आता कहाँ से है? अन्दर कोई कैसे आता है?
यह, शायद सेना में किसी को नहीं मालूम।

आपने भी उन्हें नहीं देखा, कर्नल?
नहीं... बीस वर्ष मुझे हो गये हैं सेना में... यह भी नहीं सुना कि किसी और ने देखा है।

यह स्थिति अजीब नहीं लगती?
लगती है... लेकिन इसके कारण हम सब चौकस रहते हैं कि पता नहीं कौन सेनापति हो!

मैं पता लगाऊँगा इस माजरे का... और सर्वोच्च सेनापति का भी...

तुम शायद समझते हो कि तुम पता लगा लोगे... शुरू-शुरू में सभी ऐसा सोचते हैं।

२०० वर्षों से यह रहस्य बना हुआ है - और हमेशा बना रहेगा!
??

क्लार्क, शहर में शराब की तस्करी हो रही है... पता लगाओ।
यह धन्धा तो वर्षों से बन्द पड़ा था!

आजकल क़ानूनी तौर पर शराब के भाव ऊँचे हैं इसलिए इस धन्धे में फिर लाभ होने लगा है। जाँच करो।

जंगल में एक जगह - शराब की भट्टी...

सरदार, धन्धा खूब है- जैसा पहले था... बस गश्ती सेना इसमें अड़ंगा न लगाये!
सेना को हमारा पता भी नहीं मिलेगा!

ड्यूक, सरदार इस टुच्चे धन्धे में क्यों आ गये?
टुच्चा धन्धा कहते हो! जंगल-वालों से खूब पैसा वसूलते हैं इसमें!

जंगल-वाले उनसे शराब खरीदते थे-

गड़बड़ होना स्वाभाविक ही था...

गाँव में आग! मानो उपद्रव हो गया हो! जा कर देखना होगा!

लड़ना-भिड़ना बन्द करो! आग बुझाओ-फौरन!
यह क्या गड़बड़ मचा रखी है? बोलते क्यों नहीं?
कुछ लोग ये बोतलें ले आये, महाबली वेताल! इनमें आग ही भरी है... सो हो गयी मुसीबत!
अच्छा साहब!
शराब की बोतलें! ये इन्हें कहाँ मिलीं?
मैं बताता हूँ, मृत्युंजय वेताल!
हूँऊँ... जंगल में धन्धा किया है! इसे रोकना होगा!
ट्रक पर भट्टी! यहाँ पर बनती है यह शराब...
हूँ-हूँ... ट्रक पर लाद कर शहर ले जाते हैं! जंगल-वालों को तो यों ही बेचते हैं। गश्ती सेना को यह काम सौंपा जाये।
सरदार, शराब पी कर जंगल-वाले ऐसे मतवाले हुए कि गाँव में आग लगा दी। उन्हें नहीं देनी चाहिए यह चीज़!
क्यों न दें? पैसा मिलेगा तो जरूर देंगे!
ट्रक पर निगाह रखना... देखना किधर जाती है!
जो आज्ञा महाबली!
अब गश्ती सेना को फौरन तैनात करूँ!
हम तस्करों का पता लगा रहे हैं... लेकिन अब कोई सुराग नहीं मिला!

वह एक पुराने कुँए में उतरा ...
जहरीला पानी
काम में न लायें
प्र.से. गश्तीदल

कुँए की दीवार से एक सुरंग निकलती थी...

जो पहुँचती थी गश्ती सेना केन्द्र में सेनापति के कार्यालय के नीचे!
अअ... क्या लिखूँ ? " जंगल में ट्रक पर शराब का धन्धा "...

उसने अपना पत्र एक खाने में रखा...
अटकता है। इसमें तेल देना होगा।

... वह खाना तिजोरी में खुलता था... तिजोरी ठीक ऊपर थी ...

सुरंग में वह वापस कुँए की ओर चला...
जल्दी जाना चाहिए... दिन निकलने वाला है!

वह कुँए के बाहर निकला!
शराब बनाने वालों का इन्तजाम तो हो गया समझो!

तुम रोज सुबह यहाँ दिखायी देते हो, स्मायथ!
मैं आपके साथ चलूँ, साहब ? मैं देखना चाहता हूँ कि सेनापति का हुक्म आता भी है!
सर्वोच्च सेनापति

आता क्यों नहीं ... लो! आज ही! आया है!

देखा - कैसे आता है! हूँ ऊँ... सेनापति को मालूम है इस बारे में ... हम भी तलाश में हैं ...
कर्नल जेम्स, अधिकारी... जंगल में ट्रक पर शराब का धन्धा किया जा रहा है। तुम इस बारे में ...
तालाबन्द कमरा! इसमें हुक्म आया तो कैसे आया ?

तस्करों ने जंगल में ट्रक पर अड्डा बनाया है! कभी यहाँ - कभी वहाँ। इसीलिए हमें पता नहीं चलता था!
हमारा पूरा दस्ता खोज नहीं पाया तो सेनापति को — वह चाहे जो हो — पता कैसे चला?

... और उसका हुक्म तिजोरी में कैसे आया?
स्माइथ, हम तो ये प्रश्न पूछना कब का छोड़ चुके ... क्योंकि जवाब है ही नहीं-

सेनापति की बात हमेशा ठीक निकलती है! ... तुम इस दस्ते के साथ जाओ जो तस्करों की खोज में जा रहा है!
जी हाँ, साहब! आज ही मैं पुस्तकालय नहीं गया तो यह हुआ!

भाग्यशाली हो, स्माइथ... मैं मना रहा था कि तुम्हें भेजें!
धन्यवाद - मैं भी चाहता था ...
... कुछ बात!

बस तीन ही, सार्जेण्ट? मैं समझा था और भी जायेंगे!
तस्करों को पकड़ने के लिए सारी सेना नहीं चाहिए!

अक्सर तो ऐसे काम पर एक ही सैनिक भेजा जाता है ... लेकिन इस दल में पता नहीं कितने आदमी हैं ...

बीस - पच्चीस भी हो सकते हैं! इसलिए कर्नल ने सावधानी के तौर पर तीन भेज दिये।
!

शराब के तस्कर ...
यहाँ डेरा डाले बहुत दिन हो गये ... अब कहीं और चलें! इसे चलाओ ड्यूक!

सरदार, तुम हो होशियार! यहाँ से वहाँ ... ताकि हमारा पता मिले ही नहीं!
मेरी खूबी यही है ... तुम डाल - डाल — मैं पात - पात!

आधा मील आगे होंगे। स्माइथ, तुम सीधे जाओ ... डेव, तुम पश्चिम से ... मैं पीछे से आता हूँ!

देर हो गयी... निकल गये।
जान छूटी... चलो, वापस चलें
ट्रकों के निशान जो हैं... इनके सहारे पीछा करेंगे! जीप लाओ, स्माइथ!

ठहरो... कुछ गड़बड़ लगती है।

उस पर निशान नहीं है। तस्करों ने चालाकी की है। इस नदी का तल चट्टानी है।

अब सवाल यह है कि वे इधर गये या उधर?
पता नहीं चलेगा... अब तो वापस जाना ही होगा!

नहीं... हम अलग-अलग जा कर दोनों ओर खोजेंगे। कहीं तो ट्रकों के निशान मिलेंगे!
और सैनिक क्यों न बुलवायें हम?

स्माइथ, यह गश्ती सेना है... हम खुद काम करते हैं — दूसरों की राह नहीं देखते!
जी, हाँ, साहब!

ट्रकें चली गयीं। कहाँ गयी हैं?
यह अभी पता नहीं, महाबली।

पहरे पर आदमी लगा दिये थे... उनका सन्देश आता ही होगा।
ठीक है — तब तक मैं यहीं हूँ।

ट्रकें हरियाली घाटी में

इन नगाड़ों की ढमा-ढम कभी बन्द भी होगी?
बजने दो! जंगल वाले खुशियाँ मनायेंगे तो शराब भी खरीदेंगे!
ढमा ढम ढमा ढम
ढमा ढम

डम-डम-डम-डम-डम-डम
नगाड़े पर सन्देश आया... "तस्कर हरियाली घाटी में"
सन्देश मिल गया! यह आज्ञा नदी-किनारे सैनिकों के पास पहुंचा दो।
डम-डम-डम-डम-

हमें फौरन जाना चाहिए-निशान मिटने से पहले।
तस्कर शायद हैं ही नहीं! सेनापति ने भूल की होगी!

शायद सेनापति कोई है ही नहीं! यह सेना क्या तमाशा है! अनजाने आदमी हुक्म चलाता है!
तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है शायद... शान्ति रखो!

चलो... ठहरो... जंगल-वाले को हमसे कुछ काम है। सन्देश होगा गश्ती सेना केन्द्र का।

स्वयं-सेनापति-का-सन्देश!
तस्कर हरियाली घाटी में-
स.से.
गश्ती सेना

* सर्वोच्च सेनापति।
तस्कर हरियाली घाटी में-
स.से.
गश्ती सेना
स.से. की आज्ञा! मैं भी देखूँ तो सही।
क्या समझते हो इस बारे में? पहली बार आज्ञा सीधी सैनिकों को मिली है।
हमेशा तिजोरी में ही मिलती है। बूढ़े से पूछो इसे पत्र किसने दिया।

अरे-तुम्हें यह पत्र कहाँ मिला? किसने दिया?
बोलता नहीं-

यानी स.से. बराबर हम पर निगाह रखे हुए है!
यानी सर्वोच्च सेनापति सचमुच है।

हरियाली घाटी दूर नहीं है। सोचो तो-स्वयं सर्वोच्च सेनापति ने हमें आज्ञा भेजी!
केन्द्र में सैनिकों को मालूम होगा तब देखना!

ठिकाना आ गया! पिस्तौलें साध लो... चुपचाप चलो।

कुछ देर में ...
वे रहे, हमारे शिकार-तस्कर!

आदमी काफ़ी हैं- दर्जन भर से अधिक... सब हथियारों से लैस भी होंगे। अब हम क्या करें, सार्जेण्ट?
इन्हें घेरेंगे!
इतने हथियार-बन्द आदमियों को

स्माइथ, तुम दक्षिण से... तुम पश्चिम से, डेव, और मैं पूर्व से।
उत्तर में कौन रहेगा? क्या स.से. को खुद आना होगा?

सर्वोच्च सेनापति सचमुच आया हुआ था

गश्ती सैनिकों ने तस्करों को देखा...
अपने अपने गंतव्य तक मौन चलो।

तीन आदमी दर्जन भर बदमाशों को कैसे घेरेंगे?

कोई है- उधर झाड़ियों में! कोई तस्कर होगा!
निकलो- बाहर निकलो- तुम-

ठहर गया- निकलो- तुम-. हाथ ऊपर कर के- नहीं तो गोली मार दूंगा-फि चला

हिरन है!

गोली! सब पिस्तौलें सम्हालो- मोर्चे पर।

गोली- दक्षिण से! वही मूर्ख है- स्माइथ! हमारा पता बता दिया! अब क्या करें, सार्जेण्ट?
गोली चलाओ।

गश्ती सैनिकों और तस्करों का सामना...
गश्ती सैनिक... चट्टान के पीछे! दो-एक आदमियों को भेजो— उनके पीछे की ओर!

स्माइथ कहाँ गया? गोली नहीं चला रहा है!
मैंने ही गलती की जो रंगरूट को साथ ले आया!

लड़ाई-झगड़े से घबराने वाला स्माइथ जा छिपा था!

पिस्तौलें डाल दो!
!!

गश्ती सैनिक! और कोई है?
पहली गोली दक्षिण से आयी थी... उधर कोई होना चाहिए।

यहीं-कहीं होना चाहिए था... खोजना पड़ेगा!

गश्ती सैनिक स्माइथ — भयभीत — पत्तों में छिपा था!

तीसरे सैनिक का कुछ पता नहीं... शायद भाग गया!
यह बुरा हुआ! हमें जल्दी करनी होगी! इन दोनों को गोली मार दो!

कैसा निकला यह रंगरूट! छोड़ कर भाग गया!
मेरे हत्थे पड़ जाये — तो — उस नीच — !

पागल हो? हम गश्ती सैनिक हैं! हमें नहीं मार सकते!
क्यों? तुम्हारी किताब में नहीं लिखा — इसलिए! खड़ा करो इनको! जैसे सेना में मारते हैं — वैसे ही मारेंगे!

मेरी तो जान बची... मेरी गलती है - मेरी ही गलती से - सार्जेण्ट और डेव की जान जायेगी!

तो तुम बचाने की कोशिश नहीं करोगे?

तुम कौन हो?
यह बात छोड़ो! तस्कर तुम्हारे साथियों की हत्या करने चले हैं! तुम उनकी मदद क्यों नहीं करते?

तुम नये-नये आये हो... उम्र भी छोटी है! सेना का काम तुम्हारे जैसों के लिए कठिन है... लेकिन 30 सेकण्ड के अन्दर तुम्हें कुछ करना होगा!

हम तुम सैनिकों का सैनिक सत्कार करेंगे... तुम्हारी किताब में जैसा लिखा है!

सीधे हल्ला बोल दो! गोली चलाओ... रुकना नहीं!
मैं डरता हूँ - नहीं जा सकता!

लड़ाई में सभी डरते हैं! लेकिन तुम सैनिक हो! वे तुम्हारे साथी हैं! मैं जो कहता हूँ - वह करो
अब!

निशाना साधो - अरे - यह मुसीबत
तस्कर सैनिकों को गोली मारने वाले ही थे कि...

स्माइथ है! गोली पर गोली!
छोकरा पागल हो गया है! ये बदमाश गोलियों से भून देंगे!

कहा-'गोली चलाओ - रुकना नहीं!'

यह तीसरा सैनिक है! सर फिर गया है! मार दो!

इसी समय तस्करों पर पीछे से हमला हुआ और एक बलवान पुरुष झाड़ियों से निकला!

वेताल... पिस्तौलों से गोलियाँ...
बढ़ते जाओ, जवान!

...और स्माइथ... दिल की धड़कनें और पिस्तौल से गोलियाँ... दोनों एक-सी तेज़...

... तस्कर घिर गये!
चारों ओर से चले आ रहे हैं!
सैनिक — दर्जनों हैं!

गोलियाँ बरसाते हुए वेताल ट्रकों के बीच तेज़ी से भागा —
वह तस्करों का डेरा नष्ट करने लगा!

यह तूफ़ान की तरह कौन फट पड़ा, सार्जेण्ट?
कोई भी हो... हमारी तरफ़ है! हमें मदद करनी चाहिए!

गश्ती सैनिक पिल पड़े!

वेताल उनकी सहायता कर रहा था!

स्माइथ नयी मुश्किल में फँस गया...
उफ़ — गोलियाँ ख़त्म!
सैनिक के बच्चे — मैं तेरी —

सैनिक पुस्तक का नियम ७ – संकट के समय जो हाथ में आये उसका उपयोग करो!

देखो – देखो! रंग – रूट पक्का सैनिक बन गया!

जिनमें जरा भी दम है वे सब पकड़ लिये गये, सार्जेण्ट।
गिन कर देखो। कोई भागा तो नहीं!

हमें देखा तो नहीं? बरबाद कर दिया!
देखा नहीं है – चलते जाओ! किसी तरह मोटर तक पहुँच जायें – तब समझना कि बचे!

शाबाश, सैनिकों! तुमने तस्करों को खूब पकड़ा!
सार्जेण्ट, दो कम हैं। एक सरदार और दूसरा गुर्गा।
भाग गये होंगे!

सरदार, आज यह मोटर अमूल्य लगती है!
चलते रहो! हमारा भागना छिपा नहीं है उनसे!

अब क्या! अब तो निकल गये!
इतना आसान नहीं है निकलना! मोटर तेज़ चलाओ!

वे जा रहे हैं!
उनसे मैं निबट लूँगा, सार्जेण्ट! तुम कैदियों को ले कर जीप की तरफ़ जाओ – और मेरा इंतज़ार करो!

हुक्म चलाना खूब जानता है! लेकिन है कौन मुसीबत?
जल्दी-जल्दी में यह पूछना भूल ही गया!

चाहे कोई हो – आया ठीक समय पर... नहीं तो हमारा काम तमाम था!
बिल्कुल... चलो तुम लोग!

सरदार, वह नकाबपोश कौन था? दुर्भाग्य देखो... सारा सामान गया – साथी पकड़े गये!
सामान और साथी नये आ जायेंगे... खैर यह हुई कि हम बच गये!

मैं समझा था कि तुम भाग गये लेकिन तुमने तो कमाल कर दिया! तुमने और नकाबपोश ने हमारी जान बचायी!

इन्हें क्या पता... मैं तो भाग ही जाता – नकाबपोश ने मुझे रोका –

मैं – मैं – तो मौका देख रहा था!
लेकिन एक सेकण्ड की भी देर करते तो हम खत्म हो जाते! ... हुआ सब ठाठ से!

ड्यूक, शहर पहुँचते ही हम नया सामान खरीदेंगे, नये आदमी भर्ती करेंगे... और धन्धा फिर शुरू!

पहले कुछ छुट्टी मनायी जाये! बात क्या है, सरदार?
अरे – अरे!

तूफान – तेज – और तेज!

इसका खात्मा करो, सरदार!
मोटर रोको!

मैं तुम्हारे साथ आ जाऊँ?

यह फेंक दो!
?
!

ठहरो! गाड़ी घुमाओ! हमें उस ओर जाना है!
तुम आखिर हो कौन?

देखो – हमें हमारे रास्ते जाने दो – दस हजार दूंगा!
रहने दो... मुकदमें में काम आयेगा...

सार्जेण्ट और डेव मुझे अपने जैसा वीर समझते हैं... परन्तु मैं दिल से शायद डरपोक ही हूँ!

एक तस्कर ने अचानक भागने की कोशिश की।
स्माइथ! पकड़ो!

स्माइथ बन्दूक छोड़ कर झपटा...
पकड़ने को कहा!

आउछ!
मैं लड़ने लगा – डर एकदम गायब! मैं नहीं डरता अब!

नहीं-नहीं मुझे मारो मत...
अरे – यह गुण्डा – बदमाश मुझसे डरता है!

चलो ठीक से! भागने की कोशिश की तो इस बार गोली ही मारेंगे! बढ़ो आगे!

यह रंगरूट तो तेज है, सार्जेण्ट! जान ही ले लेता!
स्माइथ, बदमाशों के साथ भी इतना कठोर नहीं बनना चाहिए। इससे हमारी सेना की बदनामी होगी।

नकाबपोश ने यहाँ ठहरने को कहा था। तुम दोनों को उसने पकड़ा कि नहीं...
अरे वह आ गया!
तुम्हारे साथी मौजूद हैं... यह सुन कर प्रसन्न होंगे कि तुम उन्हें छोड़ कर भाग रहे थे!
लेकिन आप कौन हैं?
यह चिन्ता छोड़ो! बन्दियों को शहर ले जाओ। स्माइथ तस्करों की मोटर ले जायेगा।
स्माइथ- ठहरो- तुम से बात करनी है।
मुझसे?
पहली परीक्षा में तुम खरे उतरे, स्माइथ! अपने साथियों के लिए तुमने अपनी जान खतरे में डाली।
आप आप कौन हैं?
मेरे नाम अनेक हैं। गश्ती सेना का मैं मित्र हूँ! आज तुमने सेना का सर ऊँचा किया है- यही परम्परा रखना!
मुसीबत में डर हर एक को लगता है... वीर वह है जो डर को जीत ले। सेना में तुम्हारे जैसे वीर ही चाहिए।
अच्छा- जाता हूँ- नमस्कार!
"नाम अनेक हैं।" एक नाम "सर्वोच्च सेनापति, जंगल गश्ती सेना" भी?
तस्करों को तुमने पकड़ा — गश्ती सेना को तुम पर गर्व है।
धन्यवाद, कर्नल।
पहली ही बार तुमने जो साहस दिखाया वह बहुत प्रशंसनीय है, स्माइथ! तुम्हारे पिता तुम पर गर्व करेंगे!
तुम्हारी मदद करने वाला वह नकाबपोश कौन था?
यह मालूम नहीं, साहब!
या मालूम है?
सर्वोच्च सेनापति
जंगल गश्ती सेना

रात को – गश्ती सेना केन्द्र के पास –
जहरीला पानी काम में न लाओ

कुँए के अन्दर – सुरंग के रास्ते –

स्माइथ ने प्रशंसनीय काम किया... उसे इनाम मिलना चाहिए।

उसने तिजोरी में सन्देश रख दिया।
उसे विश्वास नहीं होगा कि मैं ही वह हूँ।

रोज का काम है – देखें, स·से· का कोई सन्देश हो... तुम आते हो, स्माइथ?
जी हाँ, कर्नल।
सर्वोच्च सेनापति
गश्ती सेना

आज आया है, हुक्म! वाह – देखो तो जरी!
क्या लिखा है, साहब?

कर्नल जेम्स, प्रमुख अधिकारी
कैप्टेन एल· स्माइथ को वीरता के लिए विशिष्ट पदक दिया जाता है।
सर्वोच्च सेनापति
जंगल गश्ती सेना

विशिष्ट पदक! स्वयं सेनापति की आज्ञा से! दस वर्षों में पहली बार। क्या कहते हो?
मैं क्या कहूँ!

लो· स्माइथ, तुम्हें सर्वोच्च सेनापति की आज्ञा से वीरता के लिए विशिष्ट पदक दिया जाता है।
धन्यवाद, साहब!

लेफ्टिनेण्ट का पद और पदक – दोनों एक ही दिन... शाबाश बेटे!
लेकिन सवाल है, सेनापति है कौन?

मुझे लगता है, – वही सेनापति रहा होगा... लेकिन था तो कौन –

– था वह वास्तव में? कभी पता नहीं चलेगा –
मैंने छोड़ा यह सोचना।
जैसे हम सबने छोड़ा।

हीरों भरा कुत्ता

ठीक तरह रहना, पपी - नहीं तो, मछलियों और सुला दूंगा।

जेरी भोजन करने आओ, बेटे!
आया, मम्मी!

जल्दी! पकड़ो!

बात क्या है?
स्लिम - इस खिलौने से खतरा उठाने से फायदा?
उठाना पड़ेगा! जल्दी करो - लड़के को याद न आये!

मुझे जंचता नहीं - लाखों के हीरे खिलौने में छिपायें।
कस्टम वाले हमारे लिए तैयार बैठे हैं - इसलिए यहीं करना होगा। सुई-डोरा लाओ!

पपी - अब हम तुझ पर नज़र रखेंगे!

बोबो! बोबो!
मैं कह रही थी कि अपने खिलौनों का ध्यान रखा करो।

क्या बात है? हम कोई अपराधी नहीं!
हमें देखना है कि तुम लाते क्या हो! आओ हमारे साथ

खबर मिली थी कि लायक हीरे तुम्हारे पास हैं - जो पिछले महीने चोरी गये थे।
हम वकालत -हक का दावा करेंगे

कोई हीरा नहीं - हमने अच्छी तरह तलाशी ले ली।
कपड़े पहनो और निकलो यहाँ से!
ज्यादती हुई है हमारे साथ!
हमारा वकील जरूरी कार्रवाई करेगा और तुम्हें लिखेगा!

समझ में नहीं आता... खबर पक्की थी... हीरे वे जलयान पर लाये थे।
अब उनके पास नहीं हैं... कुछ नहीं हो सकता।

भूख लगी है, मम्मी!
होटल चलते हैं - वहीं खायेंगे, जेरी!

बेटे, खिलौना बदल लो... यह नया शेर तुम ले लो - पुराना पपी दे दो। रुपये भी देंगे।
नहीं!

यह कुत्ता है भी तो न!
छोड़ दो - इसकी माँ आ रही है।
नहीं!

मम्मी, आदमी आये थे - वे बोबो को माँग रहे थे -
बेटे, वहम हो गया है तुम्हें... आदमी कुत्ते का क्या करेंगे?

बोबो को मेरे शरीर से बाँध दो - तभी सोऊंगा!
बोबो कहीं भागेगा थोड़े ही, बेटे। सो जाओ - मैं अभी आती हूँ!

मोटर तैयार है - इंजन चल रहा है... कुत्ता ले कर आओ!
अच्छा - अच्छा! तुम्हीं ने रखवाये थे कुत्ते में!

कुत्ता बच्चे के शरीर से बंधा है... वह चिल्ला पड़ा...
आआ!

रस्सी किसी तरह टूटे - ओः - स्लिम - सीटी! खतरा! भागना पड़ेगा - लेकिन हीरे लिये बिना नहीं!

चौकीदार आ रहा है! जल्दी!
हो - हो!

ए-ए-कौन हो? क्या कर रहे हो? ठहरो!

जेरी! जेरी!

रोना बन्द कर लड़के... तुझे और कुत्ते को हवा खिलाने ले जा रहे हैं।
लड़के को ले आए, पागल हो!

कुत्ता इसके शरीर से बँधा था... तुमने सीटी का संकेत किया! अब और कितनी दूर जंगल में जाना है?

काफ़ी दूर आ गये... बच्चे को यहाँ छोड़ दो।
छोड़ दो— यहाँ— जंगल में?

वे यह बहस कर रहे थे।
हाँ-हाँ- यहीं छोड़ देंगे। वापस ले कर नहीं जायेंगे!
हत्या करना चाहते हो— जंगल में छोड़ कर!

अरे- वह गया कहाँ?
कहीं झाड़ियों में होगा! जल्दी- पकड़ो उसे!

तभी- एक गर्जना से धरती हिल उठी...

दहाड़ सुनी! शेर है! और कहीं निकट ही!
जल्दी भागो यहाँ से!

लेकिन वह कुत्ता- और उसमें हमारे हीरे...
होश ठिकाने है? चलो जल्दी! शेर...

और वह बेचारा लड़का...
मम्मी... मम्मी...

रात को जंगल में —
सुनो - यह आवाज़ किसी बच्चे की लगती है! बिल्कुल! और शेर भी है! जल्दी, तूफ़ान — तेज़!

जंगल में बच्चा आया कैसे? शेर इतना निकट है कि गोली चलाने में खतरा है —
निशाने पर लगे तब भी शेर मरने से पहले बच्चे का भुर्ता कर देगा … मेरे पहुँचने से पहले …

इसे काट खा, बोबो! काट ले! भगा दे इसे!

खतरा उठाना ही पड़ेगा —
भाग, लड़के - भाग!

हाँ-हाँ हाँ-हाँ!

जेरी ने ठोकर खायी —

उसी क्षण वेताल शेर की पीठ पर कूद पड़ा!

शेर कलाबाज़ी खा गया — लेकिन वेताल चिपटा रहा —

उसने अपने फ़ौलादी शरीर का सारा बल लगा दिया … खटाक की आवाज़ हुई —

उफ़ — बाल-बाल बचा! यहाँ कैसे आये, बेटे?
कुछ आदमी पकड़ लाये! बोबो को सुनाते आये थे।

यही बोबो है? तुम मुझसे डरते तो नहीं?
पता नहीं। तुम बुरे आदमी हो?

नहीं — मैं भला आदमी हूँ। तुम्हें तुम्हारी मम्मी के पास ले जाऊँगा। कहाँ रहते हो तुम?
मालूम नहीं — उधर है, घर …

नींद आने लगी - घर्र्र

हीरों के लिए इतनी मुसीबत उठायी... आखिर मैं आग खड़े हुए!
शेर से जो पाला पड़ा था!

मैं यों छोड़ने वाला नहीं। वाह – इसी की हमें तलाश है!
बन्दूक की

मैं शस्त्रास्त्र बेचता हूँ – पर अभी नहीं।
नीचे आ जाओ – हमें तो अभी ही चाहिएँ।

आपके पुत्र को ढूँढने में हम कोई कसर नहीं रखेंगे।
ठीक है – ठीक है। मेरा बेटा –

जेरी को आखिर ले क्यों गये? मैं धनवान भी नहीं। समझ में नहीं आता।

पैसे के लिए इसे उठा कर लाये तो छोड़ क्यों गये? या तो जंगल से वे अपरिचित हैं – या हत्यारे हैं!

उन्हें कुत्ता चाहिए था – यह तो इसकी बचपने की बात है। मेरी समझ में नहीं आता –

अब सोना चाहिए। बच्चे के बारे में कोशिश सुबह करेंगे। शेरा – सावधान!

अंधेरे में ढूँढने से कोई लाभ नहीं। सुबह तक यहीं रहेंगे।
ताला लगाओ – और थोड़ा सो लो।

निकट ही - सुबह-
नमस्कार! नींद अच्छी तरह आयी?
तुम कौन हो? मम्मी कहाँ है? - भूख लगी है।

धीरज रखो, जेरी... पास में एक गाँव है... पहले वहाँ नाश्ता करेंगे... फिर मम्मी को खोजेंगे।
आओ-पधारो, महा-बली।
धन्यवाद! बच्चे के लिए कुछ दूध और फल मिलेंगे?
बच्चा रात यहीं से भागा था... मोटर के पहियों के निशान यहीं तक हैं।
चलो-उसके उस कुत्ते को खोजें।
उफ़-यहाँ आ कर बच्चे को खोजने को जी नहीं करता... शेर आया था... जी कांपता है सोच कर..
शेर तो है-मरा हुआ!
वही लगता है-रात वाला!
किसी ने-गोली मारी इसे?
नहीं-गोली का निशान नहीं... किसी ने अपने हाथों से मारा?
मुझे तो वह रात वाला शेर ही लगता है-जो बच्चे के पीछे लगा था!
वही होगा-यही जगह थी!
लेकिन बच्चे का क्या हुआ-और कुत्ते का-हमारे हीरों का?
इस बड़े सारे शेर को हाथों से किसने मारा होगा?
मरा तो यह ऐसे ही! शरीर पर कोई निशान नहीं... नहीं-नहीं, निशान है-! यह क्या?
वेताल का चिह्न!
लगता तो है-वही है-प्रेत-चिह्न!
मेरा विचार है-जिसने शेर मारा-उसी ने यह चिह्न भी लगाया!
कौन-कौन करेगा यह? -देखो!
सियार और गिद्ध! आ गये हैं। हमें चलना चाहिए!

बेचारे बच्चे को नींद आ रही है! शेरा, यहाँ इसका पहरा दो। मैं इसके बारे में पता लगाने जाता हूँ। माँ परेशान होगी!

जल्दी सब मालूम हो जायेगा। हल्लो – पुलिस थाना दीजिये। मेरा नम्बर? कुछ नहीं!

हाँ–एक लड़का होटल से उड़ाया गया है। तुम कौन हो? कहाँ हो?
पता लगाऊँ, कि टेलिफोन कहाँ से आया।

सन्देश मिल गया– लेकिन – हल्लो– हल्लो – माँ को बता दूँ – अब कुछ हो नहीं सकता।
पता लगाने से पहले उसने फोन बन्द किया।

गलत रास्ते आ गये... मुसीबत... रास्ता भटक गये!
घबराओ मत... उधर गाँव है– पूछ लेते हैं!

पिस्तौल देख कर गाँव वाले ऐसे बन गये मानो कुछ समझते नहीं...
शहर का रास्ता कौन सा है? अरे ये समझते नहीं..
? ?
डेन– देखो!

यही है– यही है!

यह हमारा बच्चा है! खो गया था – हम इसे ढूँढ रहे हैं।
यह क्या कहता है?
कहता है, बच्चा इनका है। झूठ बोलता है। बच्चा वेताल के साथ आया है... वेताल के लौटने तक यहीं रहेगा।

हमें कोई नहीं रोक सकता–अब!

और किसी को मजा लेना है गोली का? किसी ने कुछ गड़बड़ की तो समझ लेना–!
बच्चे को छोड़ो डेन! उसके कुत्ते को उठाओ और चलो यहाँ से!

दे दो मुझे!
नहीं-मेरा बोबो है!

अचानक शेर तस्करों पर झपटा —
गोली मत चलाना! मेरा पीछा छुड़ाओ!

अब दे दो मुझे!
आ!!!!

उस जानवर ने तो मेरी बाँह ही काट दी थी... लेकिन खिलौना मिल गया!
मोटर में बैठो! तुम सब खड़े रहो!

जंगल में मोटर कहाँ से आयी? कोई बच्चे को खोज रहा है?

यह बच जायेगा... भाग्यशाली है। पिस्तौल-वाले थे कौन?
पता नहीं, महाबली बेताल!

तुझे भी मारा, मेरे दोस्त? यहाँ सूज गया है लेकिन ठीक हो जायेगा।

बोबो के बारे में वेताल का विचार गलत था।
वे बोबो को लेने आये थे।
बोबो को नहीं, तुम्हें लेने! गाँव-वालों को डरकर चले गये! हम ढूँढ लेंगे उन्हें!

यह सड़क किधर जाती है?
कहीं भी जाये... हमें कुत्ता चाहिए था सो मिल गया... हीरे इसमें सिले हुए हैं!

गज़ब – खिलौने की मुसीबत! किसी ने गोलियाँ मारकर पहियों में छेद कर दिये।
उस चट्टान के पीछे! चखाओ इन्हें मज़ा!

बड़ी तेज़ बन्दूकें हैं इनके पास... हम सामना नहीं कर सकेंगे, दोस्त! यहीं ठहरो!

चट्टान पर ही गोली चला रहे हैं... मुझे देखा नहीं!

हे-हे-
क्या मुसीबत!

क्यों तुम बच्चे को ला कर जंगल में छोड़ गये?
ओफ़!

इतने ही होशियार हो तो दे दो जवाब भी अपने आप!
तो तुम बतलाओगे नहीं... अच्छी बात है! पहियों की मरम्मत करो!

यह तो हुआ... लेकिन कुत्ता नहीं देखा है! हम वापस आ कर ले जायेंगे!
खुद बिगाड़े, मारा हमको, फिर हमीं ठीक सुधारें!

धीरे-धीरे गाँव में चलो! जवाब वहीं मिलेंगे सब!

और सारे मामले की जड़ बोबो धूल में पड़ा रहा —

लेकिन शेरा उसे भूला नहीं था...
चल, दोस्त, चल —

इन्होंने हमारे दोस्त को गोली मारी
इन्हें हमें सौंप दो, महाबली! हम इनका नाश करेंगे
यह तो आफ़त आ गयी! आ कर बुरा किया!
बोलो मत! मैं करूंगा इनसे बातें!

देखो - इन जंगलियों ने हम पर हमला किया - लूटने के लिए... हमें अपना बचाव करना पड़ा!
बड़े भोले हो तुम - हैं?

जेरी, तुम्हें उठा कर ये लोग ही लाये थे?
हाँ! बुरे आदमी! बोबो कहाँ है? बोबो लाओ!

ठीक है! बच जायेंगे मुसीबत से। और फिर जा कर वह कुत्ता उठा लायेंगे!
स्लिम! देखो!

बोबो! बोबो को बचाओ!
कमाल है! शेरा उठा लाया! शेरा, छोड़ दे – वह खिलौना है!

बोबो को मारा!
इसे अभी ठीक कर देंगे… बिल्कुल नया हो जायेगा – हूँ – यह क्या है?

खिलौने के अन्दर थैली… कंकर हैं – या हीरे! अब मामला समझ में आया!

बात है! तुमने जेरी के खिलौने में बन्द कर के हीरों की तस्करी की है!

जेरी, तुम कहते थे इन्हें खिलौना चाहिए था – लेकिन मैं मानता नहीं था!
बेचारा बोबो – इन्होंने मारा!

तस्करी की – बच्चे को उड़ाया! फिर जंगल में मरने को छोड़ गये! तुम्हें पुलिस के हवाले करूँ या इन जंगल वालों के?
पुलिस के – मेहरबानी होगी!

सुबह… पुलिस प्रमुख दूध लेने बाहर निकले…
ये हैं तस्कर… बच्चा इन्होंने ही उड़ाया!
ये हीरे – हमारे सामने – फिर भी दूर –

ममी – मैं आ गया – बोबो भी!
जेरी – मेरे बेटे!
जेरी ने कहा कि ये बोबो को चुराने आये थे – मुझे विश्वास नहीं हुआ! वास्तव में बच्चे पर हमेशा विश्वास करना चाहिए!

, बम्बई में मुद्रित और प्रकाशित। संपादक : महावीर अधिकारी।
1970 Hindi

Registered with the Registrar of Newspapers
in India under No: R. N. 11480/64